



अधिकतम : 28° C
न्यूनतम : 25° C

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

मेरठ, मंगलवार 29 जुलाई 2025 मेरठ संस्करण: वर्ष 19 अंक 58 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

www.shahtimesnews.com



विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें।
मुफ्त पढ़ें E-paper



यूपी में सबसे लंबे कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री बने योगी पेंशन 2



19 साल की दिव्या देशमुख ने चेंस विमेंस वर्ल्डकप जीता खेल टाइम्स



संवादहीन संसद में सहमा लोकतंत्र और सत्ता का एकालाप



मोहम्मद यूनुस ने भारतीय डाक्टरों को दिया धन्यवाद पेंशन 12

राज्यसभा में गतिरोध जारी, कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित नई दिल्ली। बिहार में

मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण के मुद्दे पर चर्चा कराने की मांग को लेकर राज्यसभा में सरकार और विपक्ष के बीच गतिरोध सोमवार को भी दूर नहीं हो सका और विपक्ष के हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही पहले बारह बजे, फिर दो बजे और अंततः दिन भर के लिए स्थगित करनी पड़ी। मानसून सत्र का पहला सप्ताह विपक्ष के हंगामे की भेंट चढ़ने के बाद दूसरे सप्ताह के पहले दिन भी कोई विधायी कामकाज नहीं हो सका। पहले सप्ताह में केवल एक विधेयक विपक्ष की अनुरूपस्थिति में पारित हो सका था। बारह बजे के स्थगन के बाद दो बजे जब सदन की कार्यवाही पुनः शुरू हुई तो पीठासीन उप सभापति भुवनेश्वर कलिता ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रफुल्ल पटेल को समुद्र द्वारा माल वहन विधेयक 2025 पर चर्चा शुरू करने के लिए कहा।

ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा में कांग्रेस के वक्ताओं में थरूर का नाम शामिल नहीं नई दिल्ली। संसद के

मानसून सत्र में कांग्रेस सांसद शशि थरूर अपनी पार्टी से अलग-थलग नज़र आ रहे हैं। विश्वस्त सूत्रों के मुताबिक श्री थरूर ने ऑपरेशन सिंदूर के मुद्दे पर कांग्रेस को साफ-साफ कह दिया है कि वह इस मसले पर वही बात कहेंगे, जो कहते आ रहे हैं। सूत्रों के अनुसार कांग्रेस नेतृत्व ने थरूर से बहस में शामिल होने के लिए कहा था जिस पर उन्होंने कहा कि वह ऑपरेशन सिंदूर पर सरकार की आलोचना करने वाली पार्टी लाइन का पालन नहीं कर सकते। उनसे जब संसद परिसर में पत्रकारों ने ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल किया, तो उन्होंने इस पर कोई जवाब देने की बजाय सिर्फ कहा 'मौन त्रत'।

राजस्थान में बारिश का रेड अलर्ट, आठ जिलों में स्कूल बंद नई दिल्ली। बंगाल की

खाड़ी में बना लो प्रेशर राजस्थान में एक्टिव है। इसके चलते मौसम विभाग ने राजस्थान के 14 जिलों में बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। इसके साथ 8 जिलों झालावाड़, कोटा, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, बारा, डूंगरपुर, धौलपुर और अजमेर में स्कूलों की छुट्टी घोषित की गई है। बिहार के पटना में रविवार पूरी रात हुई बारिश से हालात बिगड़ गए हैं। पटना जंक्शन पर रेल ट्रैक डूब गया है।

उपग्रह निसार का प्रक्षेपण कल चेन्नई। अमेरिकी अंतरिक्ष

एजेंसी 'नासा' और 'इसरो' का 'सिंथेटिक अपरिचर रकार (निसार) उपग्रह' 30 जुलाई को भारतीय समयानुसार शाम 5:40 बजे प्रक्षेपित किया जाएगा। 2,400 किग्रा वजन के इस उपग्रह को इसरो के जियोसिक्नोस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल-एफ 16 (जीएसएलवी-एफ16) की मदद से आंध्र प्रदेश में श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से कक्षा में स्थापित किया जाएगा।

IIT खड़गपुर में चार छात्रों की मौत पर सुप्रीम कोर्ट चिंतित

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में खड़गपुर के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में गत जनवरी से चार विद्यार्थियों की कथित आत्महत्या के मामले में सोमवार को गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए सवाल किया कि क्या गड़बड़ है? छात्र आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? इस साल जनवरी से आईआईटी खड़गपुर परिसर में यह चौथा ऐसा मामला था।

न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति आर. महादेवन की पीठ ने आईआईटी खड़गपुर और शारदा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की आत्महत्या से संबंधित स्वतः संज्ञान मामले को सुनवाई करते हुए ये उन संस्थानों से

- शीर्ष अदालत ने स्वतः संज्ञान लेते हुए किया सवाल
- क्या गड़बड़ है? छात्र आत्महत्या क्यों कर रहे हैं?

पूछा कि क्या उन्होंने इस गंभीर मुद्दे पर विचार किया है? आईआईटी खड़गपुर की प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। इन तथ्यों से ओर से पेश अधिवक्ता ने कहा कि इस मामले में 10 सदस्यीय समिति और एक परामर्श केंद्र का गठन किया गया है। इस तरह से वह मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे छात्रों की पहचान कर रहे हैं। एक फोन नंबर दिया गया है जिस पर कभी भी कॉल कर मदद ली जा सकती है। पीठ के समक्ष आईआईटी खड़गपुर और शारदा विश्वविद्यालय के वकीलों ने बताया कि दोनों घटनाओं के संबंध में विचार किया है? आईआईटी खड़गपुर की प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। इन तथ्यों से ओर से पेश अधिवक्ता ने कहा कि इस मामले में 10 सदस्यीय समिति और एक परामर्श केंद्र का गठन किया गया है। इस तरह से वह मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे छात्रों की पहचान कर रहे हैं। एक फोन नंबर दिया गया है जिस पर कभी भी कॉल कर मदद ली जा सकती है। पीठ के समक्ष आईआईटी खड़गपुर और शारदा विश्वविद्यालय के वकीलों ने बताया कि दोनों घटनाओं के संबंध में विचार किया गया है कि जहाँ तक शारदा विश्वविद्यालय का सवाल है, मृतक के पिता की ओर से प्राथमिकी दर्ज कराई गई है और जांच जारी है। इसे कानून के अनुसार आगे बढ़ने दें।

बताया कि दोनों घटनाओं के संबंध में विचार किया गया है कि जहाँ तक शारदा विश्वविद्यालय का सवाल है, मृतक के पिता की ओर से प्राथमिकी दर्ज कराई गई है और जांच जारी है। इसे कानून के अनुसार आगे बढ़ने दें।

राजनाथ का दावा: किसी दबाव में नहीं रुका 'ऑपरेशन सिंदूर' कहा: परीक्षा में पेंसिल के टूटने की चिंता नहीं, बल्कि परीक्षाफल पर फोकस जरूरी

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर को किसी के दबाव में रोकने के विपक्ष के आरोपों को सिर से खारिज करते हुए सोमवार को लोकसभा में कहा कि इस ऑपरेशन के सभी लक्ष्य तय समय में हासिल कर लिए गए थे और इसे किसी के दबाव में नहीं रोकना पड़ा।

श्री सिंह ने सोमवार को सदन में 'पहलगांम में आतंकवादी हमले के जवाब में भारत के मजबूत, सफल एवं निर्णायक ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा की शुरुआत करते हुए कहा कि आतंकवाद के खिलाफ हमारी जीरो टॉलरेंस की नीति को पूरी दुनिया ने देखा और हम इससे पीछे हटने वाले नहीं हैं। ऑपरेशन सिंदूर पूरी तरह सफल रहा और सेनाओं ने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया। उन्होंने कहा कि हमने किसी के दबाव में आकर इसे नहीं रोकना, बल्कि हमने दुश्मन के घर में सूबे पर पानी फेरा है। हमारा मकसद युद्ध छेड़ना नहीं, बल्कि हमें आतंकवादियों के ढाँचों को नेस्तनाबूद-शेष पृष्ठ दो पर



ऑपरेशन के सभी लक्ष्य तय समय से कर लिए गए थे हासिल

पहलगांम हमले व ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े सभी तथ्य सामने लाएं: विपक्ष

नई दिल्ली। विपक्ष ने लोकसभा में सोमवार को ऑपरेशन सिंदूर पर शुरू हुई चर्चा के दौरान पहलगांम आतंकवादी हमले और ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े सभी तथ्यों को सदन में रखे जाने की मांग की। कांग्रेस के उप नेता गौरव गोर्गोई ने कहा कि सरकार को पहलगांम हमले को लेकर पूरी सच्चाई देश के सामने लानी चाहिए और कांग्रेस सच्चाई के साथ है, लोकतंत्र के साथ है।

लोकसभा में जयशंकर की दो टूक

22 अप्रैल से 17 जून तक पीएम मोदी और टुम्प के बीच कोई बातचीत नहीं हुई नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने संसद के निचले सदन यानी लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा में हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि पहलगांम के बाद भारत का रुख आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता (जीरो टॉलरेंस), आत्मरक्षा का अधिकार का है। विदेश मंत्री ने लोकसभा में बोलते हुए पहलगांम आतंकवादी हमले के बाद भारत की कूटनीतिक रणनीति का जिक्र किया। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर तथ्य रखे। उन्होंने यह भी कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच किसी ने मध्यस्थता नहीं की।



उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित सभी तथ्य संसद में रखे जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि पाकिस्तान के साथ युद्ध में रफाल लड़ाकू विमान गिरे हैं, तो सरकार को इसकी जानकारी

देश को देनी चाहिए। ये अरबों रुपये की कीमत के विमान हैं और भारत के पास सिर्फ 35 रफाल विमान हैं, ऐसे में इनकी जानकारी दिया जाना बहुत जरूरी है। तुषमूल कांग्रेस के कल्याण बनर्जी ने चर्चा में शामिल होते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का श्रेय सिर्फ सैन्य बलों को मिलेगा, इसकी सफलता का श्रेय कोई और नहीं ले सकता।

जस्टिस वर्मा से सुप्रीम कोर्ट में सवाल-जवाब शुरू

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने नकदी बरामद होने के आरोपों का सामना कर रहे न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा से सोमवार को पूछा कि संबंधित न्यायिक आंतरिक जांच समिति द्वारा अपनी जांच पूरी करने और रिपोर्ट प्रस्तुत करने का इंतजार क्यों किया?

न्यायमूर्ति दीपाकर दत्ता और न्यायमूर्ति एजी मसीह की पीठ ने न्यायमूर्ति वर्मा को रिट याचिका पर सुनवाई करते हुए उनके अधिवक्ता से पूछा कि उन्होंने आंतरिक जांच समिति के गठन की वैधता को चुनौती क्यों नहीं दी और अगर यह संवैधानिक प्रावधानों के विपरीत था, तो उन्होंने इसके अधिकार क्षेत्र को क्यों स्वीकार किया। पीठ ने



पूछा: आंतरिक जांच समिति के गठन की वैधता को चुनौती क्यों नहीं दी अगली सुनवाई कल

न्यायमूर्ति वर्मा की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल व्यापक शक्तियाँ हैं। अदालत ने यह भी बताया कि शीर्ष न्यायालय के निर्णयों ने सिब्लल से सवाल किया कि जब समिति गठित की गई थी तब आपने चुनौती क्यों नहीं दी? आपने इंतजार क्यों किया?

मप्र के मंत्री विजय शाह की नीयत पर कोर्ट को संदेह

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मप्र सरकार के मंत्री विजय शाह को कड़ी फटकार लगाई है।

कारण है कि उन्होंने भारतीय सेना की महिला अधिकारी कर्नल सोफिया कुरेशी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी और अब तक उसके लिए सार्वजनिक रूप से माफी नहीं मांगी। कोर्ट ने कहा कि मंत्री विजय शाह का व्यवहार संदेह पैदा करता है कि क्या उन्होंने

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- 13 अगस्त तक जांच रिपोर्ट दे एसआईटी

जानबूझकर यह टिप्पणी की थी और अब माफी न मांगकर अपनी गलती नहीं मान रहे हैं। कोर्ट ने कहा कि इससे मंत्री की नीयत और ईमानदारी पर सवाल उठते हैं। जांच कर रही एसआईटी को सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया है कि वह 13 अगस्त तक जांच पूरी करे।

CBI ने महुआ के खिलाफ लोकपाल को जांच रिपोर्ट सौंपी

नई दिल्ली। तुषमूल सांसद महुआ मोइजा की कैश फॉर क्वेरी मामले में एक बार फिर से सुर्खिलें बंद सकती हैं। सीबीआई ने उनके खिलाफ लोकपाल को अपनी जांच रिपोर्ट सौंपी है। रिपोर्ट के आधार पर लोकपाल तय करेगा कि टीएमसी सांसद पर आगे क्या कार्रवाई करनी है। महुआ पर उनके पूर्व प्रेमी और सुप्रीम कोर्ट के वकील जय अन्तर् देहाइ ने 14 अक्टूबर, 2023 को संसद में सवाल पूछने के बदले घूस लेने के आरोप में सीबीआई में केस दर्ज कराया था।

पहलगांम हमले के मास्टरमाइंड समेत तीन आतंकी मारे गए

श्रीनगर, वार्ता

जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर के बाहरी इलाके दाचीगाम में सोमवार को सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में मारे गए तीन आतंकियों में एक आतंकी पर्यटक स्थल पहलगांम के बैसरन का कथित मास्टरमाइंड भी शामिल है। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों के दाचीगाम इलाके की ओर बढ़ने की सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों की संयुक्त टीमों ने इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया। सेना ने इसे 'ऑपरेशन महादेव' नाम दिया था। अभियान के दौरान सुरक्षा

ऑपरेशन महादेव के दौरान मिली सेना को सफलता

बलों की आतंकवादियों के साथ भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। दोनों पक्षों के बीच चली गोलीबारी में तीन आतंकवादी ढेर हो गए। उन्होंने बताया कि मारे गए आतंकवादियों में से एक लश्कर-ए-तैयबा का पाकिस्तानी आतंकवादी सुलेमान शाह उर्फ हाशिम मुसा है, जो गत 22 अप्रैल को पहलगांम में हुए हमले का कथित मास्टरमाइंड था। पहलगांम हमले में एक स्थानीय निवासी और 25 पर्यटक मारे गए थे।



बुजुर्ग इसके शिकार हो रहे हैं। कुत्तों के काटने से संबंधित यह खबर राष्ट्रीय राजधानी की है। कथित तौर पर एक पागल आवाज़ कुत्ते के काटने से छह साल की बच्ची की मौत हो गई थी। पीठ ने कहा कि इस समाचार में कुछ चिंताजनक और विचलित करने वाले आंकड़े और तथ्य हैं।

- शहर और उसके बाहरी इलाकों में हर दिन सैकड़ों कुत्तों के काटने का आ रही खबरें
- मीडिया रिपोर्टों को बेहद परेशान करने वाला और चिंताजनक बताया

सुप्रीम कोर्ट ने बंगाल की नई ओबीसी सूची पर रोक लगाते संबंधी हाईकोर्ट के आदेश पर लगाई रोक

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कलकत्ता उच्च न्यायालय के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा राज्य में ओबीसी की नई सूची को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया पर रोक लगा दी गई थी। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एनबी अजारीया की पीठ ने प.बंगाल सरकार की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया। अदालत ने कहा कि इस मामले में यथास्थिति बनाए रखना आवश्यक है। पीठ ने यह कहते हुए कि आरक्षण कार्यपालिका की कार्यप्रणाली का एक हिस्सा है।

15 अगस्त तक स्कूलों को दोबारा चालू नहीं किया गया तो होगी महापंचायत

शाह टाइम्स संवाददाता
बागपत। सरकार ने 50 से कम उपस्थिति वाले बच्चों के स्कूलों को बंद करने और उनके अन्य स्कूलों में विलय करने का निर्णय लिया है। इस फैसले का बागपत में भरपूर विरोध हो रहा है। कलेक्ट्रेट पर विरोध प्रदर्शन किया गया। इसमें समाजवादी पार्टी, कांग्रेस पार्टी, आम आदमी पार्टी सहित किसान संगठन भी मौजूद रहे। सभी ने स्कूलों को विलय के निर्णय को वापस लेने की मांग की है।

प्रदर्शन कर चेतावनी दी है कि अगर उनकी मांग नहीं मानी जाती है तो 15 अगस्त को एक महापंचायत का आयोजन होगा। कलेक्ट्रेट पर सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंचे और जमकर विरोध प्रदर्शन किया। भारतीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष प्रताप गुर्जर ने कहा कि



सरकार शिक्षा का निजीकरण करना चाहती है। इसलिए स्कूलों को बंद करने का निर्णय लिया गया है। बागपत में करीब 40 प्राथमिक

स्कूलों को बंद किया गया है। आम आदमी पार्टी के नेता सोमेंद्र ढाका ने कहा कि ज़रूरतमंद परिवारों के बच्चों की शिक्षा पर इसका बहुत दुष्प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने कहा कि अगर स्कूल में बच्चों को उपस्थिति कम थी तो यह सरकार की किलता है। उन्होंने मांग की है कि जिन स्कूलों को बंद करने का निर्णय लिया गया है, उन्हें दोबारा चालू किया जाए। बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जाए। 15 अगस्त तक स्कूलों को दोबारा चालू न किए जाने पर एक बड़ी महापंचायत का आयोजन किया जाएगा। सरकार के निर्णय के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी। धरना प्रदर्शन के दौरान सोमेंद्र सिंह ढाका, आप जिलाध्यक्ष ओमबीर सिंह सैन, ब्रह्म सिंह, जयपाल ढाका, देवेन्द्र, अजित, मनोज, मोनू, रविन्द्र, राहुल, धर्मदेव आदि मौजूद रहे।

कैंटर की टक्कर से घायल युवक की उपचार के दौरान मौत

शाह टाइम्स संवाददाता
बडौत। तहसील क्षेत्र करू दाहा गांव के कांवड़ शिविर से टीकरी जाते समय कैंटर की टक्कर से घायल हुए संदीप 34वर्षीय की मेरठ के अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। संदीप मजदूरी कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रहा था। टीकरी कस्बा निवासी देवेन्द्र ने बताया कि उसका बेटा संदीप 23 जुलाई की रात दाहा गांव के कांवड़ शिविर से घर वापस लौट रहा था। जैसे ही वह पुसार-बराल मार्ग पर गैस गोंदाम के समीप पहुंचा तो पीछे से आए कैंटर ने संदीप की बाइक में टक्कर मार दी। इस हादसे में संदीप घायल हो गया, जिसका मेरठ के निजी अस्पताल में उपचार कराया गया। रविवार को उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि कैंटर चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी गई है। तीन बेटों की मौत से बुजुर्ग देवेन्द्र के कंधों पर आई जिम्मेदारी टीकरी निवासी देवेन्द्र ने बताया कि उसके तीन बेटों में प्रदीप की दो साल पहले दिमाग की नस टूटने से मौत हो गई थी। एक साल पहले दूसरे बेटे नीरज की बीमारी से मौत हो गई। नीरज के परिवार में उसकी पत्नी रेनु, बेटे पारस, प्रिंस और बेटे चंशिका हैं। अब सड़क हादसे में घायल संदीप की मौत हो गई। परिवार में पत्नी कविता, बेटे हर्ष, लवकुश, वंश और छह माह की बेटी हैं। संदीप की मौत होने से पूरे परिवार की जिम्मेदारी बुजुर्ग देवेन्द्र के कंधों पर आ गई है।

पशुओं के लिए चारा लेने जा रही मां-बेटी के साथ बाइक सवार दो युवकों ने की छेड़छाड़

शाह टाइम्स संवाददाता
बागपत। कोतवाली क्षेत्र में रविवार शाम एक गंभीर घटना सामने आई। पशुओं के लिए चारा लेने जंगल की ओर जा रही मां-बेटी के साथ बाइक सवार दो युवकों ने छेड़छाड़ की। विरोध करने पर दोनों ने दोनों के साथ मारपीट भी की।

घटना शहर कोतवाली क्षेत्र की है। मां-बेटी जब गांव से कुछ दूरी पर पहुंची, तभी बाइक पर सवार दो युवक वहां आए। उन्होंने मां बेटी के साथ छेड़छाड़ शुरू कर दी। जब मां-बेटी ने इसका विरोध किया तो दोनों युवकों ने उनके साथ

मारपीट की। पीड़ितों के शोर मचाने पर आसपास के लोग मौके की ओर दौड़े। स्थानीय लोगों को आता देख दोनों आरोपी बाइक पर सवार होकर मौके से फरार हो गए।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल मां-बेटी को उपचार के लिए अस्पताल भेजा। पुलिस अब मामले की जांच कर रही है।

आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामला दर्ज कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पुरे महादेव मंदिर में जलाभिषेक करने के लिए उमड़ा श्रद्धालुओं का जनसैलाब

शाह टाइम्स संवाददाता
बागपत। श्रावण मास के तीसरे सोमवार को शिवालयों में भक्तों का जनसैलाब उमड़ रहा है। सुबह से ही शिवालयों पर भारी भीड़ पहुंच रही है। भक्त भगवान भोलैनाथ का जलाभिषेक कर अपनी मनोकामनाएं मांग रहे हैं।

बागपत के ऐतिहासिक पुरा महादेव, परशुराम रामेश्वर मंदिर सहित जनपद के सभी शिवालयों में शिवभक्त बम-बम भोलै और हर-हर महादेव के जयकारे लगा रहे हैं। भक्त भगवान आशुतोष को जलाभिषेक कर अपनी मनोकामनाएं मांग रहे हैं। तीसरे सोमवार को बागपत पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। जहां-जहां शिवालयों पर अधिक संख्या में शिवभक्त पहुंच रहे हैं,



वहां पर सुरक्षा को लेकर विशेष इंतजाम किए गए हैं। ड्रोन और सीसीटीवी के माध्यम से भी पुलिस नजर बनाए हुए है।

ऐतिहासिक मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित जय भगवान शर्मा ने बताया कि श्रावण मास में भगवान शिव की भक्ति करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है।

उन्होंने कहा कि यह महा तपस्या का महीना है। जनपद के खटा प्रहलादपुर गांव के महेश मंदिर, खेकड़ा के शिव मंदिर सहित जनपद के सभी शिवालयों में बड़ी संख्या में शिवभक्त भगवान आशुतोष को जलाभिषेक कर रहे हैं। सुबह से ही बड़ी संख्या में शिवभक्त भगवान आशुतोष का जलाभिषेक करने के लिए पहुंच रहे हैं।

डीएम व एसपी ने सुरक्षा व्यवस्थाओं को मजबूत करने के निर्देश दिए

शाह टाइम्स संवाददाता
बागपत। जिला कारागार का निरीक्षण करने पहुंचे जिलाधिकारी अस्मिता लाल और पुलिस अधीक्षक लाल कुमार राय ने सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अधिकारियों ने जेल की बैरिकों की सघन तलाशी कराई और जेल प्रशासन के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

तलाशी के दौरान अधिकारियों को कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली। फिर भी उन्होंने सुरक्षा को लेकर कड़े निर्देश जारी किए। अधिका. रियों ने स्पष्ट किया कि कोई भी कर्मचारी अपनी ड्यूटी में लापरवाही न बरते। निरीक्षण के दौरान जेल कर्मियों में हड़कंप मचा रहा। निरीक्षण समाप्त होने के बाद जेल प्रशासन के अधिकारियों ने राहत की सांस ली। डीएम और एसपी ने जेल चिकित्सालय का भी निरीक्षण



किया। उन्होंने उपचार प्राप्त कर रहे बंदियों से बातचीत की। उन्हें मिल रही सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। अधिकारियों ने जेल में लगे सीसीटीवी कैमरों की कार्यप्रणाली

भी जांची। अधिकारियों ने सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने के निर्देश दिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कोई अधिकारी अपने कार्यों में लापरवाही बरतता तो उस पर

कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। जेल प्रशासन में डीएम और एसपी के आगमन से हड़कंप मचा था, जो निरीक्षण पूरा होने के बाद ही शांत हुआ।

31 जुलाई को भगवान पारसनाथ पर चढ़ेगा आस्था का लड्डू

शाह टाइम्स संवाददाता
छपरीली। कस्बे से जैन समाज के 120 श्रद्धालुओं का एक भव्य जत्था झारखंड स्थित पावन तीर्थ सम्पद शिखरजी की यात्रा पर रवाना हुआ। श्रद्धालु 27 किलोमीटर की दुर्गम और पर्वतीय यात्रा नंगे पांव तय कर भगवान पारसनाथ के चरणों में लड्डू चढ़ाकर पूजा अर्पित करेंगे। यात्रा धार्मिक आस्था, कठोर संयम और जीवदया के भाव का प्रतीक बन गई है।

श्री 1008 महावीर दिगंबर जैन मंदिर कमेट्री कोषाध्यक्ष राहुल जैन, एवं समाजसेवी अभिषेक जैन व अन्य पदाधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि यह तीर्थ स्थल झारखंड के गिरिडीह जिले में स्थित है, जिसे जैन धर्म का हिमालय और सबसे पवित्र पर्वत शिखरजी माना

जाता है। यही वह स्थान है जहाँ जैन धर्म के 20 तीर्थंकरों ने निर्वाण प्राप्त किया था। जंगलों, घाटियों और पहाड़ियों से होकर गुजरने वाली यह यात्रा हर साल हजारों श्रद्धालुओं द्वारा संयम और श्रद्धा के साथ पूर्ण की जाती है। इस यात्रा में संयम जैन, राहुल जैन, अक्षत जैन, अंकित जैन, दीपक जैन, विशाल जैन, यश जैन, चांदनी जैन, नेहा जैन, पारस जैन, ऋषभ जैन सहित अनेक श्रद्धालु भाग ले रहे हैं। श्रद्धालुओं ने कहा कि यह यात्रा केवल पैरों की नहीं, आत्मा की तपस्या है। 31 जुलाई को सभी श्रद्धालु भगवान पारसनाथ के चरणों में लड्डू चढ़ाकर विशेष आराधना करेंगे। जैन समाज के इस विशाल धर्मयात्रा आयोजन को लेकर पूरे छपरीली क्षेत्र में धार्मिक वातावरण बना हुआ है।

चोर समझा कार सवारों पर हमला कर की तोड़फोड़

शाह टाइम्स संवाददाता
रटौल। ड्रोन की दहशत को लेकर पहरा दे रहे युवकों ने एक कार सवारों को चोर समझ कर रात्रि हमला कर कार में तोड़फोड़ की पीड़ित के रिश्तेदारों ने थाने में तहरीर देते हुए कारवाही की मांग की है।

ड्रोन को लेकर अफवाहों का बाजार गर्म है। रटौल में ड्रोन की दहशत को देखते हुए युवक लाठी डण्डों के साथ पहरा दे रहे थे तभी नहर के पुल के समीप देर रात्रि एक कार आयी तो युवकों ने उन्हें रुकने का इशारा किया, लेकिन उन्होंने कार नहीं रोकी तो युवकों ने कार पर हमला बोल तोड़फोड़ शुरू कर दी कार में गुड्डू पुत्र सिराज, जुनैद पुत्र मुमताज, महमूद अकरम पुत्र इब्नत अली व आसिफ पुत्र शाहिद



निवासी अलीगढ़ सवार थे जो रटौल अपनी रिश्तेदारी में इब्नत के यहाँ आये थे। उन्होंने लाठी डण्डे सवार युवकों को बदमाश समझ गंड़ी नही रोकी थी जिसके चलते गाड़ी में

तोड़फोड़ हुई रटौल निवासी इब्नत ने 150 अज्ञात युवकों के खिलाफ तहरीर देते हुए कारवाही की मांग की है।

अवैध हथियारों के साथ युवक की तस्वीर वायरल

शाह टाइम्स संवाददाता
छपरीली। क्षेत्र के एक गांव के युवक का सोशल मीडिया पर एक युवक की कई आपत्तिजनक तस्वीरें वायरल हो रही हैं, जिसमें वह कई अवैध हथियारों के साथ नजर आ रहा है। वायरल हो रही तस्वीरों में युवक अर्धनग्न अवस्था में सोफा पर बैठा है और उसके हाथों में एक नहीं, बल्कि तीन चार तमंचे दिखाई दे रहे हैं। यही नहीं, फोटो के एक कोने में एक युवती के साथ युवक की एक और तस्वीर चस्पा है, जिस पर मेरा बच्चा लिखा हुआ है।

सोशल मीडिया युवक के फोटो वायरल होने के बाद क्षेत्र में चर्चाओं का विषय बना हुआ है। इस मामले में जब छपरीली थानाध्यक्ष देवेश कुमार शर्मा से बात की गई तो उन्होंने बताया कि वायरल फोटो की



जांच की जा रही है। सत्यता की पुष्टि के बाद मामले को गंभीरता से लिया जाएगा और कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि पुलिस टीम इस पूरे मामले की गहनता से जांच कर रही है। वायरल

तस्वीरों ने सिर्फ अवैध हथियारों की उपलब्धता पर सवाल खड़े करती हैं, बल्कि कानून के खले उल्लंघन और समाज में गलत संदेश फैलाने वाली मानसिकता की ओर भी इशारा करती हैं।

उत्तम क्षमा होता है सबसे बड़ा धर्म, प्रभु दर्शन से मिलता है नूर

शाह टाइम्स संवाददाता
बडौत। नार में जैन समाज द्वारा 16 मंडलीय 16 दिवसीय महामंडल शांति विधान का चौथा दिन है यह विधान भगवान शांतिनाथ की आराधना और अभिषेक के लिए किया जाता है। इस विधान का उद्देश्य विश्व शांति समृद्धि और सद्भाव स्थापित करना है। आचार्य श्री 108 नवम सागर महाराज ने विधान के माध्यम से कहा उत्तम क्षमा सबसे बड़ा धर्म होता है। प्रभु दर्शन से नूर मिलता है, गम में दिल को सुख मिलता है, जो भी आया शांतिनाथ के चरणों में, उसे फल जरूर मिलता है। उत्तम क्षमा सबसे बड़ी क्षमता होती है। कसयाओं का वजन जितना कम कर सकते हो काम कर लेना चाहिए। उसके लिए

सबसे ज्यादा जरूरी क्षमा धर्म है क्षमा धर्म सबसे बड़ा होता है। गलती का प्रायश्चित्त है क्षमा मांग लेना। पूजा सुबह 6 बजे शुरू होती है। इसमें विश्व शांति के लिए विधान किया जाता है। इसके बाद मंडल विधान की पूजा होती है। इसमें 16 पुण्याजक परिवार शामिल होते हैं जिसमें प्रत्येक भाग में कम से 8 16 32 64 अरघ चढ़ाए जाते हैं और पांच महाअर्घ्य चढ़ाए गए। आज के विधान में सो धर्मैद्र बनने का सौभाग्य अरुण जैन ज्वैलर्स का बुडसैनी वालों परिवार को मिला। आज की धर्म सभा में प्रवीण जैन मनोज जैन दिनेश जैन मनोज जैन सभव सतीश जैन राजेश जैन राकेश जैन आदि ने भाग लिया।

किशोरी की मौत का कारण नहीं पता चलने पर दोबारा किया गया पोस्टमार्टम, पूरी घटना का राजफाश

शाह टाइम्स संवाददाता
बडौत। तहसील क्षेत्र के पलड़ा गांव में सानिया की गला दबाकर की हत्या इस मामले की छानबीन की जांच पूरी हो चुकी है। शनिवार को डीएम के आदेश पर शव कब्र से निकालकर पोस्टमार्टम किया गया। मौत का कारण पता नहीं चलने पर चिकित्सकों का पैनल सोमवार को दोबारा पोस्टमार्टम किया गया। वहीं, पुलिस का दावा है कि अनुसूचित जाति के किशोर से शादी की जिद करने पर परिवार व रिश्तेदारी ने मौत के घाट उतार दिया था और टीबी से

थी। उसके भाई समेत पांच आरो. पितों को गिरफ्तार करने के अलावा एक किशोर को भी पकड़ा है। उन्हें न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया है। किशोर को बाल सुधार गृह भेजा गया है। अनुसूचित जाति के 17 वर्षीय किशोर का मुस्लिम समाज की 16 वर्षीय किशोरी सानिया के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों शादी करना चाहते थे, लेकिन नाबालिग थे। एक सप्ताह पहले दोनों घर से चले गए थे। चार दिन पहले किशोरी को हिमालय प्रदेश से उसके स्वजन अपने साथ नहीं चलने पर चिकित्सकों का पैनल सोमवार को दोबारा पोस्टमार्टम किया गया। वहीं, पुलिस का दावा है कि अनुसूचित जाति के किशोर से शादी की जिद करने पर परिवार व रिश्तेदारी ने मौत के घाट उतार दिया था और टीबी से

मौत होने की बात कहते हुए 23 जुलाई की सुबह शव कश्मिरान में दफना दिया। सानिया के प्रेमी अनुसूचित जाति के किशोर के पिता की सूचना पर पुलिस ने किशोरी के ताऊ मतलुब को पकड़कर पृछताछ की तो पूरी घटना का राजफाश हो गया। शनिवार को पुलिस ने मतलुब की निशानदेही पर सानिया के शव को कब्र से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। दो चिकित्सकों के पैनल ने पोस्टमार्टम किया। इसकी वीडियोग्राफी भी कराई गई। कुटुंब के लोग व ग्रामीण किशोरी के शव को एबुलेंस से लेकर रवाना हो गए थे। रास्ते से एबुलेंस वापस बुलाकर किशोरी का शव मचरी में

रखवा दिया गया था। एएसपी एनपी सिंह ने बताया कि पुलिस ने इस मामले में किशोरी के पिता वलीस, भाई साहिब, ताऊ मतलुब, चाचा सादिक, तहरे भाई आरिस, पूजा नसीम, फूफा शान मोहम्मद, एक किशोर व तीन अज्ञात आरो. पितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया। आरोपितों ने सानिया के मुंह पर कपड़ा रखकर दबा दिया था, जिससे दम घुटने से उसकी मौत हो गई थी। रविवार को किशोरी के भाई साहिब, चाचा सादिक, फूफा शान मोहम्मद व नसीम, ताऊ मतलुब को गिरफ्तार करने के अलावा एक किशोर को भी पकड़ कर घटना में प्रयुक्त कपड़ा बरामद किया गया।

सूचना मेरे पुत्र का आचरण ठीक नहीं है गलत आचरण के चलते मैं अपने पुत्र नदीम व पुत्रवधू नाममा से सम्बंध विच्छेद करते हुए अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूँ भविष्य में अपने किसी भी कृत्य के लिए वे स्वयं जिम्मेदार होंगे। शौकीन पुत्र सद्दीक निवासी पट्टी छिजाना कस्बा टीकरी थाना दोषट तहसील बडौत जनपद बागपत।	PUBLIC NOTICE In my son's school records, his date of birth is 28.09.2014 and my name is Mohammad Khurshid Khan which is wrong. Whereas his correct date of birth is 28.09.2011 and my correct name is Mohamad Khurshid Khan. Mohamad Khurshid Khan s/o Mohamad Rahishu Khan res. of Court Road, Old Tehsil Baghpat.
सूचना मेरे पुत्र का आचरण ठीक नहीं है गलत आचरण के चलते मैं अपने पुत्र दिलशाद व पुत्रवधू शगुप्ता से सम्बंध विच्छेद करते हुए अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूँ भविष्य में अपने किसी भी कृत्य के लिए वे स्वयं जिम्मेदार होंगे। जहीर पुत्र ताजुल निवासी मोहल्ला मुगलपुरा कस्बा व थाना बागपत जनपद बागपत।	NOTICE I, Ritu mother of Pari, resident of faizpur ninana baghpat do hereby declare that her name has been wrongly written as Pari Dhankar in school records the correct name is "Pari" and her category is generally written as "OBC". I request the concerned authorities and general public to note this correction.

ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा

सप्ताहभर गतिरोध के बाद आखिरकार सोमवार को लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर को लेकर चर्चा हुई। चर्चा में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने जहां सरकार की तरफ से मोर्चा संभाला, तो वहीं विपक्ष की तरफ से कांग्रेस के उप नेता गिरध गोगोई ने विशेष रूप से मोर्चा संभाला। चर्चा में भाग लेते हुए रक्षा मंत्री ने साफ किया कि ऑपरेशन सिंदूर किसी के दबाव में नहीं रोका गया। जबकि विपक्ष इस तरह का आरोप लगाता रहा है कि ऑपरेशन सिंदूर को किसी के दबाव में रोका गया है। राजनाथ सिंह ने स्पष्ट किया है कि हमने सभी ऑपरेशन को लक्ष्य तय समय में हासिल किए और यह सारी प्रक्रिया आतंकवाद के खिलाफ हमारी जीरो टॉलरेंस की नीति का हिस्सा है और हम इससे पीछे हटने वाले नहीं हैं।

मलतब साफ है कि अगर भविष्य में इस तरह के हालात पैदा होते हैं, तो भारत इस तरह की कार्रवाई करने में हिचकिचाएगा नहीं। रक्षा मंत्री ने यह भी साफ किया है कि भारत का इरादा युद्ध लड़ने का नहीं था, बल्कि आतंकियों के दांचे को नैस्तनाबुद करना था, जिसको हमारी सेना ने 22 मिनट में हासिल कर लिया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने युद्ध रोकने को लेकर कहा कि पाक की तरफ से सैन्य अभियान महा-निदेशक के स्तर पर संपर्क का आग्रह किया गया था। जिसमें कार्रवाई रोकने की बात कही गई थी। भारत ने यह पेशकश इस शर्त के साथ स्वीकार कर ली थी कि यह अभियान संपर्क रोका जा रहा है और भविष्य में कोई दुस्साहस हुआ तो अभियान फिर प्रारंभ होगा।

उन्होंने विपक्ष को इस बात को लेकर भी आलाचना की कि वह गैर जिम्मेदाराना सवाल उठाता रहा है, जिसमें भारत के विपक्ष ने विमाना गिरे यह सवाल भी है। इस पर राजनाथ सिंह ने कहा कि यह सवाल राष्ट्रीय भावनाओं का सही प्रतिनिधित्व नहीं करता। जब लक्ष्य बड़े हों, तो छोटे मुद्दे पर सवाल नहीं किए जाते। विदेश मंत्री जयशंकर ने भी आपरेशन सागर चर्चा पर हिस्सा लेते हुए कहा कि भारत और पाक के बीच किसी ने मध्यस्थता नहीं की। जाहिर है, ऐसा कहकर वह अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को ही आपना दिखा रहे थे, जो बार-बार युद्ध रोकने का श्रेय लेने की कोशिश करते रहे हैं। जयशंकर ने यह भी बताया कि पहलगाम आतंकी घटना के बाद किंसा तरह के कदम पाक के विरुद्ध उठाए गए। विपक्ष की तरफ से गौरव गोगोई ने चर्चा में भाग लेते हुए सरकार पर कई सवाल दामोदर पहला सवाल तो उनका यही था कि आखिर आतंकवादी भारत की धरती पर कैसे आए और वह एक घंटा तक सवाल स्थल पर कैसे रहे। फिर वह कहाँ गायब हो गए। सौ दिन गुजर जाने के बाद भी आज तक उनके बारे में सरकार के पास कोई जानकारी नहीं है। न ही उनकी जानकारी सरकार के पास है जिन्होंने आतंकवादियों की मदद की। सवाल माकूल भी है, जब तक आतंकवादी पकड़े नहीं जाते, तब तक भ्रम की स्थिति बनी ही रहेगी। साथ ही गोगोई का यह भी कहना था कि सरकार को बताना चाहिए कि जब पाकिस्तान घटनाओं पर आ गया तो उसको क्या चाल डील हुई, उन्होंने तो यह भी पूछा कि आखिर ऐसी क्या मजबूरी थी जिससे युद्ध को रोकना गया।

परीक्षा में रिजल्ट की अहमियत होती है

अप्रेषन सिंदूर के दौरान हमने आतंकियों को उनके घर में घुसकर मारा, सेना ने आतंकियों से हमारी माताओं-बहनों के सिंदूर का बराला लिया, हमारा मकसद आतंकी ठिकाने तबाह करना था और सेनाओं ने अपना लक्ष्य हासिल किया, हमने किसी के दबाव में पाकिस्तान से सौजफायर नहीं किया, विपक्ष पूछ रहा है कि युद्ध में हमारे कितने फाइटर जेट गिरे, उन्होंने यह नहीं पूछा कि हमारे सशस्त्र बलों ने दुश्मनों के कितने जेट गिराए, परीक्षा में रिजल्ट की अहमियत होती है, कितनी पेंसिल टूटी या पेन गुम, यह पूछना बेईमानी है। अप्रेषन सिंदूर के सभी लक्ष्य तब समय में हासिल कर लिए गए थे।

-राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री

भारत का लोकतंत्र बहुमत से नहीं, संवाद से चलता है। संसद केवल बहुमत की गिनती का मंच नहीं, बल्कि विचारों की परख, नीतियों की बहस और जनमत की अभिव्यक्ति का पवित्र स्थल है, किन्तु दुर्भाग्यवश, बीते कुछ वर्षों में यह देखा गया है कि बहुमत की अहंकार ने संवाद की संस्कृति को हाशिए पर डाल दिया है। न सत्तापक्ष सुनना चाहता है, न विपक्ष को बोलने दिया जाता है। संसद की कार्यवाही सुचारु नहीं, बल्कि रणनीतिक बन गई है, जहां विपक्ष की हर आलोचना देशद्रोह का पर्याय बना दी जाती है, और बहुमत के हर निर्णय अतिम सत्य मान लिया जाता है। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने संसद को एक ऐसा मंच माना जहां उन्हें आलोचना सुनी हो, तो वे पूरे धैर्य से हों। प्रत्यक्ष किम् प्रमाणम्, प्रचंड बहुमत होते हुए भी विपरीत विचारधारा और मुखर वक्तव्य शैली के साथ श्यामा प्रसाद मुखर्जी को उन्होंने ना केवल अपने मंत्रीमंडल में शामिल किया वरन् उनका जहाँ बार्ता का संज्ञान भी लिया। एक बार जब राममनोहर लोहिया ने बेहद तीखी भाषा में सरकार की नीतियों का आलोचना की, तो नेहरू ने उन्हें बोलने से नहीं रोका, बल्कि कहा कि आलोचना लोकतंत्र का प्राण है। अगर मैं आलोचना नहीं सुन सकता, तो मुझे यहाँ नहीं होना चाहिए। जब कथन न केवल उनकी राजनीतिक परिपक्वता दर्शाता है, बल्कि उस समय की लोकतांत्रिक संस्कृति से हमारा परिचय भी कराता है, लेकिन वर्तमान समय में संसद में जो दृश्य देखने को मिलते हैं, वे लोकतंत्र के लिए चिंता का कारण बनते जा रहे हैं। जिस संसद को सरकार और विपक्ष मिलकर चलाते हैं, वह उस टकराव का अखाड़ा बनती जा रही है।

सप्ताश्व संवाद को बजाए, संख्याकार को निरर्थक हो गया है और विषय अपने अधिकारों के लिए आंदोलन करने को विवश है। इस प्रक्रिया में सबसे अधिक नुकसान उस लोकतंत्र को हो रहा है जिस जनता ने अपने मत से चुना था। इसी संदर्भ में तीन कृषि कानूनों का प्रयोग हमारे सामने एक जीवित उदाहरण के रूप में खड़ा है। बिना पर्याप्त विचार-बहस, बिना किसी संसदीय समिति में भेजे और बिना बिना विपक्ष की सहमति या जन-संवाद के, तीनों महत्वपूर्ण कानून संसद में पारित कर दिए गए। प्रजित्वा की सीधा अपर देश के लगभग पचासाला जनता के सामने पड़ना, उनकी आवाज न तत्काल को न सुना गया। न कोई संसद में विस्तृत बहस हुई, न किसानों के संगठनों को विश्वास में लिया गया। परिणाम यह हुआ कि देश के किसान एक वर्ष से अधिक समय तक सड़कों पर रहे,

संवादहीन संसद में सहमा लोकतंत्र और सत्ता का एकालाप



सिकड़ों जानें गईं, और अंततः सरकार को कानून वापस लेने पड़े। यह केवल नीति की हार नहीं थी, यह संसदहीन शासन के पतन का प्रतीक था। इसी दौर में संसद के अंदर और बाहर कई ऐसी घटनाएँ झकझोर दिया। उस समय भी संसद को महज एक औपचारिक मुहर बना दिया गया। लेकिन जनता ने इसका जवाब दिया और आपातकाल के बाद के चुनावों में लोकतंत्र की पुनर्स्थापना हुई।

हुई जिन्होंने लोकतंत्र की नींव को झुकझोर दिया। कई बार विपक्ष के सांसदों को सदन से निलंबित कर दिया गया। केवल इसलिए कि उन्होंने अपनी बात रखने की कोशिश की।

बहस करने की बजाय, संसद को कुशलता से चलाने की बजाय, सांसदों को निष्कासित कर देना संसदीय गरिमा का अपमान है। यह परंपरा नहीं, आराजकता है और तो और, एक ऐतिहासिक विस्मृति के रूप में यह घटना भी दर्ज हुई कि भारत के उपराष्ट्रपति, जो गण्यसभा के सचिव भी होते हैं, उनके खिलाफ विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव लाने की घोषणा की। यह इस बात का संकेत है कि संसद के उच्च सदन में इस बार असमंजसों के लिए कोई सम्मान नहीं बचा। यह लोकतंत्र की संरक्षा में लिए खतरनाक संकेत है। संसद के इतिहास में ऐसा भी समय रहा है जब इंदिरा गांधी की सरकार ने आपातकाल लागू कर देश की संवैधानिक संस्थाओं को लगभग ठप कर दिया। संविधान संशोधन के माध्यम से ऐसा बदलाव लाया गया जिसने संविधान की आत्मा को ही

उसी प्रकार जब अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे, तब उन्होंने विपक्ष को हमेशा सुना। बहुमत न होने के बावजूद, उन्होंने संवाद को भी छोड़ा नहीं। विपक्ष के संशोधन प्रस्तावों को गंभीरता से लिया गया, नीतियों में समावेश किया गया। मनमोहन सिंह, सोमनाथ चटर्जी जैसे विपक्षी नेताओं की बातें ध्यान से सुनी जाती थीं। संसद में बहस होती थी, तीखी आलोचना होती थी, पर लो. कर्तंत्र चलता था। संसद, संसद की तरह चलती थी। आज उस परंपरा का पतन हो रहा है। संसद का मानचूँ सत्र कई बार बिना किसी कार्यवाही के समाप्त हो जाता है क्योंकि विपक्ष को बोलने नहीं दिया जाता या विपक्ष केवल वाकआउट तक सीमित रह जाता है। विधेयक बिना चर्चा पारित हो जाते हैं। संसदीय समितियों का महत्व कम हो गया है। विधायी प्रक्रिया में जनता की भागीदारी लगभग समाप्त हो चुकी है। आज जरूरत है उस संस्कृति की पुनः स्थापना की, जहाँ बहस हो, असमंजस हो, संवाद हो, संशोधन हो, और सबसे जरूरी सहमति हो। लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का नाम



बहस करने की बजाय, संसद को कुशलता से चलाने की बजाय, सांसदों को निष्कासित कर देना संसदीय गरिमा का अपमान है। यह परंपरा नहीं, अराजकता है और तो और, एक ऐतिहासिक विस्मृति के रूप में यह घटना भी दर्ज हुई कि भारत के उपराष्ट्रपति, जो राज्यसभा के सभापति भी होते हैं, उनके खिलाफ विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव लाने की घोषणा की। यह इस बात का संकेत है कि संसद के उच्च सदन में भी अब असहमति के लिए कोई समान नहीं बचा।

नहीं है, वह सत्ता चलाने की जिम्मेदारी है कृ
सबको साथ लेकर, सबकी सुनकर। संसद में
बहुमत का अर्थ केवल विधेयक पारित करना
नहीं, बल्कि सहमति बनाना होना चाहिए। यदि
संसद में संवाद खत्म हो गया, तो लोकतंत्र केवल
एक ढांचा बनकर रह जाएगा कृ जिसमें आत्मा
नहीं होगी। विपक्ष का काम केवल विरोध करना
नहीं, वैकल्पिक सोच प्रस्तुत करना है। और सत्ता
का धर्म है, उस विरोध को सुनना। एक स्वस्थ
संसद वही है, जिसमें बहस होती हो, न की जिसमें
बहुमत का शोर सनाई दे।

आज के समय में जब राजनीति संवाद से अधिक प्रचार की ओर बढ़ रही है, तब यह लेख एक स्मरण है कि भारत का लोकतंत्र बहम, संशोधन और सहमति से चलता है। संसद केवल बहुमत की गिनती का नाम नहीं, बल्कि देश की आत्मा की अभिव्यक्ति है। और यदि वह आत्मा मौन हो गई, तो लोकतंत्र केवल दिखावा बन जाएगा।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

समय के साथ अंतरिक्ष में भारत का बढ़ता कद

इसकी शुरुआत वमशुशल दलखई दे रही एक दरस से हुई जो फाल्कन-9 बुस्टर की प्रेशर फोडलइल के वेल्ड जॉइंट में छिपी हुई थी। यह अंतरिक्ष दलक की वशलल मशीनरी में संभवतः एक छोटी सी खामी रही होगी, लेकिन भारत के लिए, यह निर्णायक घड़ी थी। इसरो के हमारे सचेत और अटल वैज्ञानिकों ने जवाब मांगा। उन्हींने कामचलाऊ उपायों की बजाए, मरम्मत पर जोर दिया और ऐसा करके, उन्हींने न सिर्फ एक मिशन की रक्षा की बल्कि एक सपने की भी दिहाजत की। उस सपने ने 25 जून, 2025 को उडान भरी, जब भारतीय वायु सेना के अधिकारी और इसरो-प्रशिक्षित अंतरिक्ष यात्री, ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला, एक्सओम-4 मिशन के जरिए कक्षा में पहुंचे। एक दिन बाद अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) से जुड़कर, वह कून सिर्फ अंतरिक्ष में, बल्कि मानव-कॉर्डित वलान, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी के भविष्य में भी भारत की अगली बड़ी छलंग का चेहरा बन गए।

यह कोई रस्मी यात्रा नहीं थी। यह एक वैज्ञानिक धर्मयुद्ध था। शुक्ला अपने साथ सात माइक्रोग्रैविटी प्रयोग लेकर गए थे। इनमें से प्रत्येक प्रयोग को भारतीय शोधकर्ताओं ने उन सवालों के उत्तर जानने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया था, जो न केवल अंतर्देश यात्रियों के लिए, बल्कि हमारे समूचे देश के किसानों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और छात्रों के

लिए भी महत्वपूर्ण है। अंतरिक्ष में मशीं और मृग के बीजों के अंकुरित होने के बारे में विचार कीजिए। यह सुनने में सरल, लगभग काव्यात्मक प्रतीत होता है, लेकिन इसके निहितार्थ गहरा हैं। अंतरिक्ष यान के सीमित क्षेत्र में, जहां पोषण का प्रत्येक ग्राम मायने रखता है, वहां यह समझना कि माइक्रोग्रैविटी में भारतीय फसलें कैसे व्यवहार करती हैं, लंबी अवधि के मिशनों के लिए चालक दल के आहार को नए सिरे से परिभाषित कर सकता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पृथ्वी पर, विशेष रूप से मृदा क्षरण और जल की कमी से जूझ रहे क्षेत्रों में, ऊर्ध्वाधर खेती और हाइड्रोपोनिकस में नवाचारों को प्रेरित कर सकता है।

इसके अलावा भारतीय टाईग्रिड्स का अध्ययनकृन् सूक्ष्म जीवों को इनकी मजबूती के लिए जाना जाता है। मुत्तावस्था से जागे इन सूक्ष्म जीवों का अंतरिक्ष में जीवित रहने, प्रजनन और जेनेटिक एक्सप्रेसन की दृष्टि से अवलोकन गया। उनका व्यवहार जैविक सहनशक्ति के रहस्यों को उजागर कर सकता है, जो टीके के विकास से लेकर जलवायु-प्रतिरोधी कृषि तक, हर चीज में सहायक हो सकता है। शुक्ला ने मायोजेनेसिस प्रयोग भी किया। इस प्रयोग में इस बात की पड़ताल की गई कि मानव मांसपेशी कोशिकाएं अंतरिक्ष में प्रतिस्थितियों और पोषक तत्वों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देती हैं। यह निष्कर्ष मांसपेशीय क्षय के

उपचार में क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं, जिससे न केवल अंतरिक्ष यात्रियों को, बल्कि वृद्ध रोगियों और आघात या ट्राuma से उबर रहे लोगों को भी लाभ होगा। अन्य जरी प्रयोगों में सघनोबेक्ट्रीकी की वृद्धि ये ऐसे जीव हैं, जो संभवतः किसी दिन अंतरिक्ष में जीवन-रक्षक प्रणालियों की सहायता कर सकते हैं तथा चावल, लोबिया, तिल, बैंगन और टमाटर जैसे भारतीय फसलों के बीजों का माइक्रोग्रैविटी के संपर्क में आना शामिल है। इन बीजों को पीढ़ी दर पीढ़ी उगाया जाएगा ताकि वंशानुगत परिवर्तन का अध्ययन किया जा सके, जिससे संभावित रूप से चरम वातावरण के अनुकूल नई फसल किस्में विकसित हो सकें।

यहाँ तक कि मानव-मशीन संपर्क को भी परखा गया। शुक्ला ने यह सम्झने के लिए प्लेब-आधारित आकलन किया कि इलेक्ट्रॉनिक डिस्के के साथ बातचीत करने की हमारी क्षमता को माइक्रोग्रैविटी किस प्रकार प्रभावित करती है - जो भविष्य के अंतरिक्ष स्टेशनों और अंतरिक्ष यान के लिए सहज ज्ञान युक्त इंटरफेस डिजाइन करने के लिए एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि है। यह कोई अमूर्त प्रयास नहीं है। यह समाज के लिए विज्ञान के भारतीय लोकाचार में गहराई से निहित है। एक्सओम-4 का हर प्रयोग पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित करने की क्षमता रखता है कूचांगे वह ओडिशा का कोई जनजातीय किसान हो, शिलांग

का कोई स्कूली बच्चा हो, या लदाख का कोई पेंटलाइन डॉक्टर हो।

इस मिशन में वैविक अंतरिक्ष कर्तृनीति में भारत के बड़े कद को भी दर्शाया। सुरक्षा प्रोटोकॉल के पूरे हमारे द्वारा जो दिए जाने में स्पेसएक्स को एक संभावित विनाशकारी खामी की पहचान करने और उससे ठीक करने में मदद की। नासा, ईएसए और एक्सओएम स्पेस के साथ हमारा सहयोग समान साझेदारी के एक नए युग को दर्शाता है, जहाँ भारत के केवल भाग ही नहीं ले रहा है, बल्कि नेतृत्व भी कर रहा है। पूरे मिशन के दौरान, हमारे फ्लाइट सर्जनों ने शुकरी के स्वास्थ्य पर नजर रखते हुए उनकी शारीरिक और मानसिक संहत का ध्यान रखा। वे पूरे जोश में रहे और लखनऊ से लेकर त्रिवेंद्रम, बैंगलूर से लेकर शिलांग तक, पूरे भारत के छत्रों से नावाचीत करते रहे और युवा मन में विज्ञान और अंतरिक्ष की संभावनाओं को प्रति उत्साह जगाते रहे। शुकला अब लौट आए हैं और वह अपने साथ प्रचुर मात्रा में डेटा, नमूने लाए हैं और उनके द्वारा लाई गई अंतर्दृष्टि भारत के आगामी गगनयान मिशन और भारत अंतरिक्ष स्टेशन को शक्ति प्रदान करेगी।

-डा. जितेंद्र सिंह
(लेखक केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री
स्वतंत्र प्रभार, पृथ्वी विज्ञान और प्रधानमंत्री
कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग,
कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री हैं)

अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति की दिशा में मध्य एशिया

इ स्राईल को लंबे समय से मिल रहे अमेरिकी संरक्षण से वैसे तो पूरी दुनिया बली भाँति चालक है। प्रन्तु अब इस अमेरिकी संरक्षण को वाकफे इस्राईल खासतौर से गजा में जिसतरह मानवता को लगातार बर्बर हत्या करता जा रहा है उस से देखकर दुनिया के अधिकांश देश न केवल इस्राईल के खिलाफ होते जा रहे हैं बल्कि उन्हें इस्राईल को दिया जाने वाला अमेरिकी संरक्षण भी अरस नहीं आ रहा है। अरबों शक्तिप्रिय मध्य एशिया में तबाही, बर्बादी व अशांति की इमारत लिखने वाला अमेरिकी संरक्षण इस्राईल ही है।

7 अक्टूबर 2023 को जब से दक्षिणी इस्राइल पर हमला द्वारा हमले किए गए और 251 लोगों को बंधक बनाया गया उसके बाद इस्राईली सेना (आर्मीएफ) ने हमला की आतंकी कार्रवाई के जवाब में जिस तरह गजा पट्टी में बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई शुरू की और आज तक जहाँ है उसने इस्राइल व अमेरिका के आमतोप जेहरी के पूरी तरह उजागर कर दिया है। गजा में बर्बरता और अत्याचार की हर सीमाओं को इस्त्राईल पर कर चुका है। हिंदाशरी बस्तियां अस्पतालों स्कूलों शरणार्थी कैंपों धर्मस्थलों आदि को खंडहर बनाने के बाद अब भूखे नितर्यों को मार रहा है।

खबर है कि गंजा में गंजा ह्यूमनटेरियन फाउंडेशन (जीएचएफ) की ओर से बांटा जा रहा खाना बहुत कम लोगों तक पहुंचने के कारण वहां भुखमरी की स्थिति उत्पन्न पैदा हो गई है। कई बार ऐसी अमानवीय घटना भी घटी है कि जब जीएचएफ के भोजन वितरण केंद्र पर मदद लेने के लिए भूख से तड़पते बच्चे व महिलाएं भोजन की



खातिर आकर लाइन में लगे उसी समय उन पर इसरा. इली सुरक्षा बलों ने गोलियां चला दीं जिससे दर्जनों लोग मरे गए। कई बार इस्राएली सुरक्षा बलों द्वारा भूखे शरणार्थियों को खाना देने के लिए बुलाया गया, बाद में लाइन में खड़े होने के बाद उनपर गोलीबारी कर अनेक लोगों की हत्या कर दी गई।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय के अनुसार पिछले दो महीनों में भोजन हासिल करने की कोशिश कर रहे एक हजार से अधिक फिलिस्तीनी, इस्राइली हमलों में मारे जा चुके हैं। इन्हें से कम से कम 766 लोगों की मौत उन चार वितरण केंद्रों के आसपास हुई है, जिन्हें जीएचएफएच संचालित करता है। इसके अलावा 288 लोगों की मौत संयुक्त राष्ट्र और अन्य सहायता केंद्रों के पास हुई है। सौ से अधिक सहायता संगठनों और मानवाधिकार समूहों का कहना है कि गजा में बड़े

पैमाने पर मानव जनित भूखमरी फैल रही है। अंतर्राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विशेषज्ञों ने इन हालात के लिए इस्राइल को जिम्मेदार ठहराया है क्योंकि वही फिलस्तीनी क्षेत्रों में भेजी जाने वाली सप्लाय को नियंत्रित करता है।

आम लोगो ही नहीं बल्कि गजा में युद्ध की रीपाँटियाँ
करने वाले अपने अस्थायी व विदेशी प्रचक्र व उनका
परिवार भी भूखमरी का सामना करने को मजबूर है।
कुछ प्रचक्र तो इस हद तक असहाय हो चुके हैं कि व
अपने मासूम अहाथ बच्चों व परिवार के लिए भोजन
तक नहीं जुटा पा रहे हैं। गजा में काम करने वाले कुछ
प्रचक्र तो अपनी जान की बाजी लगाकर लाइनों में
लाइन चौराई किचन से खाना ले रहे हैं। उनके बच्चे
दिन में सिर्फ एक बार दाल, चावल या पास्ता खा कर
गुआरा करने को मजबूर हैं। कुछ प्रचक्रों ने तो शहत
बताया कि उन्होंने भूख दबाने के लिए नमक मिला
पानी पीना शुरू कर दिया है। जरा सोचिए जिन प्रचक्रों
की बंदोलत दुनिया को इस्त्राएली सेना के जुटम और
गजा के लोगों की बेबसी व बर्बादी की खबर सुन और
दिखाई देती थी अगर वही प्रचक्र व उनका परिवार
सुरक्षित नहीं रहेंगा तो अमेरिकी संरक्षित इस्त्राएल के
काले करतुत दुनिया तक कैसे पहुँचेंगे?

इन्हीं हालात में अनेक अंतर्राष्ट्रीय राहत संगठन और मानवाधिकार समूह बड़े पैमाने पर भुखमरी फैलने की चेतावनी दे रहे हैं। एक ओर तो इस्राइल-अमेरिका फिलिस्तीनियों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले हमसफ़र को आतंकी संगठन बताकर उसकी आड़ में पूरे फिलिस्तीन पर नियंत्रण हासिल करने की फिराक में हैं।

तो दूसरी ओर यही इम्राईल-अमेरिकाअहमद हुसैन अल-शरा, जिसे अबू मोहम्मद अल-जुलानी के नाम से भी जाना जाता है, को सौरिया में बशर अल असद का तख्ता पलटकर उसे अंतरिम राष्ट्रपति बना देता है। यह वही जुलानी है जिस पर कुछ समय पहले तक अमेरिका ने दस मिलियन डॉलर का ईनाम घोषित कर रखा था, क्योंकि वह अलकायदा से जुड़ा था। 2017 में उसने अन्य कई आतंकी संगठनों के साथ मिलकर हथियार तहरीर अल-शाम HTS नामक संगठन बना लिया था। अमेरिका ने HTS को आतंकी लिस्ट में भी रखा था। अब अमेरिका ने उसके संगठन HTS को आतंकी लिस्ट से भी हटा दिया है। गंगा को व्यक्ति अमेरिका के हर विभाजनकारी इरादों में साथ रहे वह उसके लिए आतंकवादी नहीं और जो उसके और इम्रायल के खिलाफ हो या अपनी स्वतंत्र नीति रखता हो वह आतंकवादी घोषित हो जाता है चाहे वह ईरान जैसा संप्रभुता संपन्न राष्ट्र हो क्यों न हो।

वहअहाल, अमेरिका को सर्वशक्तिमान मानने वाले
 अमेरिकी शासकों को यहाँ करम पर जीने वाले कुछ अमेरिकी
 पिप्लू देशों की रहस्यों व तानाशाहों की बात छोड़ दें तो
 पूरा विश्व खासकर मध्य एशियाई देश इस बात को
 समझ चुके हैं कि अब समय आ गया है कि किसी भी
 तरह इस्त्राईल को अमेरिकी हस्तक्षेप से मुक्ति दिलाई जा
 जाए। ईरान का भय दिखाने सुन्नी शिया मतभेदों को
 बढ़ावा देना दरअसल अमेरिका की जो सुन्नी देशों के प्रति
 हजदती नहीं बल्कि एक बड़ी चाल है जिसे मुस्लिम
 मानते हैं वह बखूबी समझ चुका है। मुस्लिम जात



युलानी की आड़ में सीरिया को बर्बाद करने की साजिश को भी समझ रहा है। परन्तु खबर यह भी है कि सीरियाई जनता भी अमेरिका इश्राईल के सीरिया के प्रति नापाक इशाराओं को भांप कर एकजुट होने लगी है। मध्य एशियाई क्षेत्रों को अमेरिका से मुक्त कराने के शुरुआत संकेत मिलने लगे हैं। ईरान ने 23 जून को कतर की राजधानी दoha स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे अल-उदैद एयरबेस पर मिसाइलों दाग कर तथा इराक और सीरिया में भी अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बना कर यह चेतावनी दे दी है कि अमेरिकी सैन्य अड्डे मध्य एशियाई क्षेत्रों में सुरक्षित नहीं हैं। साथ ही इराकी प्रशिरोध समूहों, विरोध रूप से कताबह हिजबुल्लाह, ने इराकी सरकार को यह चेतावनी जारी कर दी है कि वह अमेरिकी सेना को दो महाने के भीतर बगदाद अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा और एल अल-असद बेस सेना इराकी सैन्य ठिकानों, से पूरी तरह से हटने के लिए कहें। इराकी प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी को इस संबंध में पहले से सहमति के आधार पर कार्रवाई करने के लिए पर्याप्त समर्थन दिया गया था और अल केवल दो महाने बचे हैं यानी सितंबर 2025 के अंत तक अमेरिका को इराक छोड़ने की चेतावनी दे दी गई है। इस चेतावनी में यह भी कहा गया है कि अगर यह कार्रवाई समय सीमा में पूरी नहीं हुई, तो उनकी अलग राय होगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

